कहानी

एक प्यार ऐसा भी

आनन्द और सुभाष दोनों बचपन के मित्र थे। दोनों का आपस में बहुत प्रेम था। एक दिन अपनी? युवावस्था में दोनों ने टहलते- टहलते ऐसे ही मजाक करते हुए कहा कि यदि तेरे यहाँ लडका और मेरे यहाँ लड़की हुई तो? अपन उन दोनों की शादी कर देगें ताकि अपनी मित्रता भी बनी रहेगी और साथ भी नही छूटेगा। बात आई - गई हो गई और दोनों भूल भी ग?ए। दोनों अपनी घर गृहस्थी में व्यस्त हो गए। समय बीतता गया और आनंद के घर लड़की श्रुति ने जन्म लिया। बोलती कम थी लेकिन जब भी बोलती थी , सीधा दिल पर वार करती। उसे देख कर लड़के? उलझन में पड़ जाते और बोलने की हिम्मत नहीं करते। उसके पापा को चिंता थी कि उसे कौन अपनाएगा?? उससे कौन शादी करेगा?मगर कहते है कि रिश्ते ऊपर से तय होकर आते है। आनन्द को अपने मित्र सुभाष की? याद आई कि उसके यहाँ लड़का हुआ था। आनन्द ने सुभाष को फोन लगाया, बातचीत हु?ई और रिश्ता तय हो गया। श्रुति की? शादी कुणाल से हो गई। शादी के बाद कुछ हफ्ते अजनबी? जैसे गुजर गए। ना ज्यादा बात ना ज्यादा शिकायत। बस दो लोग एक छत के नीचे रोज चाय और खाने की टेबल पर मिलते लेकिन माहौल हमेशा ठंडा और फीका। मगर फिर वक्त ने करवट ली। कुणाल बीमार पड़ गया और श्रुति ने उसकी खूब देखभाल की। कुणाल ने भी श्रुति के आफिस के काम में मदद की। एक दिन चुपचाप? कुणाल ने एक सुंदर सी ड्रेस लाकर श्रुति के सामने रख दी और दोनों मुस्करा दिए।

? श्रुति कुछ दिनों के लिए मायके गई थी। एक शाम कुणाल ने श्रुति की दराज खोली। वहाँ एक फाइल थी जिस पर लिखा था 'तलाक़ के पेपर '! उसका गला सूख गया और हाथ कांपने लगे। कुणाल के लिए वह लम्हा किसी? सजा से कम नहीं था।उसके मन में क?ई सवाल उठ रहे थे लेकिन जवाब? अधूरे थे। क्या ये रिश्ता सच में एक मजाक था? श्रुति के आने पर कुणाल ने कहा - मैने फाइल पर हस्ताक्षर कर दिये है। वो बोला - दुख इस बात का नही है कि तुम्हें मुझसे तलाक़ चाहिए था, इस बात का हैं कि तुमने ये? फैसला लेने से पहले मुझसे एक बार भी बात नहीं की। श्रुति ने धीरे से कहा- मैंने ये फाइल शादी के पहले हफ्ते में ही बनवा ली थी क्योंकि मैं तुम्हें किसी मजाक या बात के बंधन में बांधना नहीं चाहती थी । तुम्हें लगे कि यह रिश्ता सिर्फ जिम्मेदारी है तो तुम बिना किसी अफसोस के जा सको। मेरे लिए यह रिश्ता मेरी जिन्दगी बन गया है। ?? दोनों की आंखों से अश्रु छलक पडे और दोनों ने एक दूसरे को बांहों में भर लिया। श्रुति ने मुस्कुरा कर कहा- यह रिश्ता पापा लोगों की मजाक से शुरू हुआ था लेकिन हम इसे मजाक में खत्म नही होने देंगे। और दोनों पापा से मिलने चल पड़े।

कुसुम जैन शाजापुर
242 आलोक नगर इन्दौर।

कहानी

आज्ञा का पालन

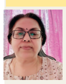

'दादो आपकी उम्र क्या होगी..? ' 'पंचानबे (95) साल। ' 'ह्द्दद् पर दादो..! लगती तो सत्तर की हो कैसे..? राज क्या है..? ' 'अब तुमलोग के जैसे तो हैं ना... की दो तीन बजे रात तक जागे और दस बजे दिन तक सोए। ना कशरत ना योगा तो तंदुरुस्ती कहां से आवेगी। ' 'अच्छा, तो तुम्हारा कहना है कि तुम योग करके इतनी यंग हो...? ह ह ह ह ह क्या बात है दादो। अच्छा ये बताओ करती कब हो ? मैंने तो कभी ना देखा वो सो कॉल्ड योगा करते। ' 'सोया रहबेगा तो कैसे देखेगा। चार बजे भोर में नित्य क्रिया से निपट कर बैठ जाती हूँ योग करने... सबसे पहले ओंकारा प्राणायाम फिर अनुलोम विलोम, कपाल भांति.. ' 'कब से कर रही हो ? ' 'जब कॉलेज में पढ़ती थी तब से। ' 'दादो ! एक सवाल पूछें, सच सच बताना......? ' 'पुछ ' 'क्या दादु भी योगा करते थे.....? ' 'हां.. क्यूं पूछ रहा है ? ' 'तब तो पक्का तुमने या फिर दादु ने एक दुसरे को पटाया होगा है न...? ' 'तुम्हारे दादू से पार्क में योगा करते हुए मिले थे.... फिर हमलोग दोस्त बन गए फिर.... ' 'फिर क्या दादो बोल न चुप क्यों हो गई..? ' 'बदमाश 'और एक चपत लगा दी। 'ओय होय देखो कैसे शर्मा रही कुड़ी ... गाल तो देखो लाल टमाटर हो गया। ' 'नालायक. ! दादी से मशखड़ी करता है' कह उसके कान मडोड़ दी। 'दादो..! दर्द हो रहा है छोड़ो...बता न फिर क्या हुआ ? ' 'फिर क्या.. दोस्ती प्यार में बदला उसके बाद शादी हो गई । हम साथ में ही योगा करते,बच्चों को भी सिखाया। दादु तो मुझे छोड़....कहते गए, स्वस्थ रहना है तो कभी भी योगा करना नहीं छोड़ना... कह चले गए । आज भी उनकी आज्ञा का पालन कर रही हूँ.. तभी स्वस्थ और तंदरुस्त हूं। तुमलोगों का तो कोई रूटीन नहीं... ना सोने का ना जागने का नाही खाने का.... सब के सब बेरूटिन हो । 'दादो ! कल से हम सब आपके रूटीन से चलेंगे और योगा भी करेगें....आपकी तरह चुस्त दुरुस्त तंदरुस्त बनेंगे , और आपकी आज्ञा का पालन भी करेगें अब खुश।

रीता मिश्रा तिवारी

चुटकी

हास-परिहास : सप्ताह की प्रमुख ख़बरों पर व्यंग्यकार की चुटकी

अयोध्या स्थित श्रीराम मंदिर में चढ़ावा चोरी प्रकरण की जाँच के लिए प्रदेश सरकार ने एसआइटी गठित कर 7 दिन में प्रारंभिक व 15 दिन में विस्तृत रिपोर्ट सौंपने को कहा।

जाँच करें, मालूम हो, किसका है यह काम।
फिर बुलडोजर से करें, उनका काम तमाम॥

टीएमसी के 20 बागी सांसदों ने त्रिपुरा की पंजीकृत लेकिन ग़ैर मान्यता प्राप्त पार्टी एनसीपीआई (नेशनलिस्ट सिटीजंस पार्टी ऑव इंडिया) में विलय किया। लोकसभा में एनसीपीआई के पाँचवे बड़े ब्लॉक बनने की संभावना।

जिस दल का कल तक न था, कोई नाम-निशान।
मिली उसे तृणमूल से, एक नई पहचान॥

अमेरिका-ईरान युद्ध के समझौते के प्रारूप पर डिजिटल हस्ताक्षर हुए। जिनेवा में 19 जून को औपचारिक कार्यक्रम होगा। ईरान को 28 लाख करोड़ देंगे ट्रंप। शांति डील का बाज़ार, तेल और रुपए पर तत्काल सकारात्मक असर देखा गया। डील से नेतन्याहु असहमत।

आखिर क्या हासिल किया, लड़कर लंबा युद्ध।
पूछ रहे हैं विश्व के, सारे आज प्रबुद्ध॥

फ्रांस के एवियन में जी-7 समिट में मोदी-ट्रंप की भेंट हुई। ट्रंप ने मोदी को शांत, संयमित और शानदार नेता बताया और वादा किया कि जब तक वे राष्ट्रपति हैं, भारत का दोस्त मौजूद रहेगा।

पहले भी वे कर चुके, मोदी के गुणगान।
फिर क्यों टैरिफ टैक्स की, दी थी चादर तान ॥

स्पीकर बिड़ला से मिले उद्धव के बागी सांसद, शिवसेना (शिंदे) में विलय का सौंपा पत्र।उद्धव पर विचारधारा से भटकने और कांग्रेस में विलय की दिशा में बढ़ने का लगाया आरोप।

अब होगी कुछ इस तरह, राजनीति में रेस।
या तो होगी भाजपा, या होगी कांग्रेस॥

ओम वर्मा
100, रामनगर एक्सटेंशन
देवास 455001(म.प्र.)
मोबा. 09302379199

पिता की चिंता

कहानी

रजनी,राशि को आठ वर्ष की उम्र में मेरे सहारे छोड़ मुझें व अपनी चहेती लाडली बिटिया को बीच मझधार से ही इस सांसारिक जीवन से रुकसत हो गई। ' फूल सिंह अपने बीते समय को याद कर उन लम्हों में खो गया। ' कहाँ खो गये फूल सिंह ? ' झकझोरते हुए शंकर सिंह ने पूछा। ' कहीं नहीं भाई जी, बस यूँ ही जीवन के पदचापों की झुनझुनी आवाज़ सुन रहा था। ' आज दोनों दोस्त यूनिवर्सिटी के पार्क में बैठ कर किसी गम्भीर विषय पर चिंतन मनन कर रहे हैं। फूल सिंह अपने पारिवारिक भाई कम दोस्त जिसे बचपन से ही भाईजी कहता है,को वह माजरा समझा रहा है। यधपि शंकर सिंह के मगज में यह माजरा पहले ही एक अबूझ पहेली जैसा बैठा हुआ है। बसंत में प्रातःकालीन समय,लरजती बहती हवा। अम्लतास के वृक्ष पर बैठी कोयल अपनी मीठी कूक से दिल को लुभा रही है । शंकर सिंह ने समय और परिस्थिति को मध्यनज़र रख फूल सिंह को समझाते हुए कहा ' रिश्ते कपड़े के धागों के ताने-बाने जैसे होते हैं, बुनकर कपड़ा बुनते समय इन्हें सही नहीं सहेजता है तो उसकी बनावट बिगड जाती है उसमें झिरकी रह जाती है, तो उसका बाजार भाव कम हो जाता है। इसलिए रिश्तों को न ढीला छोड़ना चाहिए न ही अधिक कसना चाहिए। ' फूलसिंह ने आँखों की कोर को तिरछी कर याचक की दृष्टि से देखा। कोई पच्चास बावन की पगी देह होगी पर जीवन में सामाजिकता के थपेड़ें खा-खा कर ऐसा लग रहा था जैसे मेह के बाद बादलों की आभा उतर गई हो। शंकर सिंह ने अपने बैग में से थरमस और कप निकालकर चाय डाली, एक कप फूलसिंह को पकड़ाते हुए सिप - सिप चाय के दो घूंट एक साथ भरे, फिर कहने लगा - जिसे तुम अपने जिगर का टुकड़ा मानते थे, जिसके लिए तुमने अपना जीवन कुर्बान कर दिया। आज उस राशि के लिए इतनी विरक्ति क्यों? ' ' भाईजी जो राशि मुझें ही माँ -पापा, भाई-बहन अपना सब कुछ समझती थी। घर आते ही दिनभर की पूरी राम कथा मुझें अक्षरशः सुनाये बिना अपने कपड़े तक नहीं बदलती थी, वह अब मुझसे दूर-दूर रहने लगी है। ऐसा लगता है जैसे उसका कोई अलग ही परिवार बना गया हो। घर से यूनिवर्सिटी क्लासेज के बहाने सुबह आठ बजे निकलना, रात को आठ बजे तक वापस आना, पूछने पर कुछ भी न बताना। यही सब कुछ एक पिता की चिंता है जो मुझें सताती है। ' जिस पिता को यह गर्व था कि वह अपनी बेटी के साथ ग्वाले के जैसे हमेशा खड़ा है, उसे आज अहसास हो रहा है कि उसकी भेड़ तो हरी घास के चक्कर में फंसकर पहाड़ कि चोटी पर पहुँच गई है जहाँ पर बुड्ढा गवाला चढ़ ही नहीं सकता। उस ग्वाले के अंतस में जो अनभिज्ञ भय,एक कोने में उठता है उसी भय की आग आज फूल सिंह के मन में धधक रही है । सोचा था आधी नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृति लेकर मिलने वाली पेंशन से बेटी को सब लाड़ प्यार दूँगा और इतना काबिल बना दूँगा कि मेरे न रहने पर भी उसे जीवन की सब मजबूतियाँ मिले। वह अपने आप को कमजोर न समझे। जिस बैंच पर दोनों बैठ कर बात कर रहे थे, उस पर धूप आ गई। दोनों उठकर घर की तरफ़ रवाना होने लगे। शंकर सिंह ने बुझी -सी श्वांस लेते हुए ' वर्तमान युग में बच्चे या युवा अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ज्यादा से ज्यादा समय व्यतीत करते हैं, अतः उन्हें ही अपना सगा मानते हैं। और तुमने भी एक सपरे-सा व्यवहार किया। जैसे सपेरा अपनी छब्बडी से सर्प को निकलता है बीन बजा उससे खेल दिखाता है और वापस उसे छब्बडी में बन्द कर देता है। चलते-चलते कहता रहा। भावावेश में फूल सिंह - 'भाईजी पिता का खयाल आते ही बच्चों में एक इत्मीनान और सुरक्षा का भाव आना चाहिए। क्योंकि इससे जीवन की बहुत सी परेशानियां आसानियों में बदल जाती हैं। ' दोनों घर पहुंचे, आज कई दिनों के बाद शंकर सिंह, फूल सिंह के साथ उसके घर आया था।

घर बिल्कुल ही सुसज्जित, हर चीज यथा स्थान करीने से रखी हुई । तभी राशि पानी की ट्रे ले आई। सुगढ़ सूडोल छरहरी देह। ऊँचा कद। गोर वर्ण। नीला सलवार सूट।खुले केश। ललाट पर छोटी नीली बिंदिया से चाँदनी रात में चमकते पूर्णिमा के चाँद -सा चमकता चेहरा। सुंदरता की प्रतिमूर्ति। सब कुछ सोने पे सुहागा था। पानी पी, शंकर सिंह उठ खड़ा हुआ। आज मैं चलता हूँ।ऑफिस जाना है,फिर कभी आता हूँ। ' शंकर सिंह के पीछे-पीछे राशि ने भी अपना बैग उठाया और चलने लगी। ' कहाँ जा रही हो बेटी ? ' ' काम है कोई ' ' मुझें भी बता दो क्या काम है ? जब तक तुम घर वापस नहीं आ जाती मुझें चिंता सताती रहती है। ' ' अब मैं बच्ची नहीं हूँ, मेरे पीछे-पीछे कब तक रहोगे। मुझें मेरा जीवन जीने दो पापा । ' फूल सिंह ने प्यार भरी नजरों से मुख़ातिब होते हुए कहा, 'बच्चे कितने भी बड़े क्यों न हो जाये, माँ-बाप के लिए वो सदैव बच्चे ही रहते हैं। और एक पिता अपनी जवान बेटी की चिंता न करे तो और .... बात बीच में ही अधूरी छोड़ राशि तपाक से बाहर निकल गई। फूल सिंह के सीने में क्रोध का उबाल ऐसे आ रहा था जैसे गैस पर दूध उबल रहा हो, परन्तु उसने तुरंत अपने उबाल पर पानी के छींटे मारे और खिड़की से बाहर झाँकने लगा। राशि बाहर खड़ी एक चमचमाती कार में सवार हो रवाना हुई। गाड़ी से उड़ती धूल और धुँवा को फूल सिंह देर तक देखता रह गया। वहीं रखी कुर्सी पर बैठ वह चेतन से अचेतन और अचेतन से कब स्वप्न के आगोश में खो गया। उसे पता ही नहीं चला। स्वप्न में एक कबूतरी अपने अंडे पर दुबके हुए बैठी थी, दूर कहीं बिल्ली उस पर नजर गड़ाए हुये, कबूतर अपने मुँह में दाना लेकर आता है, वह दाना वहाँ रख फिर दूर चला जाता है, कुछ देर बाद फिर दाना लाता है, यह क्रम कई देर चलता रहा। पर इसबार जब कबूतर दाना लेकर आया तो बिल्ली ने कबूतरी को दबोच लिया था, इतने में ही किसी अज्ञात व्यक्ति ने आकर बिल्ली को तो भगा दिया पर कबूतरी बहुत ही घायल हो गई थी। उसकी आँखों में कबूतर का इंतजार था, तभी कबूतर दाना लेकर आया तो उसकी आँखों में फड़फड़ा कर अपने प्राण त्यागती कबूतरी का दृश्य था। अचानक उसकी आँखें खुल गई। उसकी नम आँखों में वह दृश्य पुनः कौंध गया। अस्पताल में अपनी आठ वर्ष की अबोध राशि का हाथ कैसे रजनी ने उसके हाथ में सौंपा था। ऐसे ही जाने अनजाने ख्यालों में कब दोपहर हुई, दोपहर से कब गोधूलि का टेम हो,सब पंछी भी अपने अपने बसेरे में लौट चुके थे । समय गुजरता गया और एक पिता की चिंता बढ़ती गई। पास के

मंदिर में ठाकुर जी की आरती भी हो गई पर अभी तक भी राशि अपने घर नहीं लौटी। इंतजार करुणायुक्त होता है। इंतजार यदि अज्ञात भय युक्त हो तो वह क्रोध में बदल जाता है। विचारमग्न हो फूल सिंह अपने अंतस में सोचने लगा कहाँ कमी रह गई मेरे प्यार में, मैंने अपनी राशि के लिए अपने सारे सपनों को तिलांजलि दे दी। अपनी सारी इच्छाओं को मन में दबोच लिया। मेरी लाडो के लिए यह करूँगा, मेरे जिगर के टुकड़े के लिए यह करूँगा। बिटिया को कभी माँ की कमी महसूस नहीं होने दूँगा। सामने दीवार पर टंगी रजनी की फोटो को देख, ' तू ही समझा उसे, कहीं गलत संगत में न पड़ जाये, आजकल कहीं किसी का कोई भरोसा नहीं है। आज के युवा न जाने क़िस अंधी दौड़ में अंधेरों में उजालों की तलाश कर रहे हैं। न परिवार की मान मर्यादा का,न सामाजिक रीति रिवाजों का, और न ही जातपांत का इन्हें ख्याल है। यह सोचते सोचते फूल सिंह की कब आँख लग गई पता ही नहीं चला। शहर के घंटाघर की घड़ी में टन-टन ग्यारह घण्टे बजे तब घर का गेट खुला तो उसकी आँखें खुली। ' कहाँ से आ रही हो ? कड़क आवाज में ' कॉलेज का ट्यूर था। ' ' घड़ी देखो क्या टाईम हुआ है ' ' ग्यारह ही तो बजे हैं ' ' ग्यारह ही......?... ' मैंने तुम्हारे साथी राजू सिंह से फ़ोन करके पूछा था,उसने तो कोई ट्यूर की बात नहीं बताई। ' उसने राशि की ओर देखते हुए कहा। ' तो अब आप मेरी जासूसी भी करने लगे हो।' पलट कर जवाब देते हुए राशि ऊँची आवाज में बोली। ' जासूसी नहीं है यह, यह एक पिता की चिंता है बेटी।' ' क्यों करते हैं इतनी चिंता,क्यों हमें अपने भविष्य के लिए आजाद नहीं छोड़ते हैं। क्यों पिंजरे में बन्द कर रखना चाहते हैं ? क्यों ? ' ' यह आजादी,यह सुनहरे सपने, सब कुछ समय के लिए ही अच्छे लगते हैं..... फूल सिंह अपनी बात पूरी करता उससे पहले ही राशि अपने कमरें में जा जोर से गेट बन्द कर लेती है। फूल सिंह जो खाना बनाकर बेटी का इंतजार कर रहा था,वहीं सोफ़े पर बैठ गया । शहर के घंटाघर की घड़ी टन-टन बारह घण्टे बजाती है। गहरी अँधेरी रात सांय-सांय कर तेज हवा के थपेड़ें मारने लगी। (3) बसंत माह की सुबह, हल्की-हल्की खिली धूप, कोयल की मधुर कूक वातावरण को और भी खुशनुमा बना देती है। घड़ी में नौ बजे की अलार्म बजी तो राशि की नींद खुली। चेतन होते ही उसे याद आया की दस बजे का सोमेश को टाईम दे रखा है, आज वह उसे लॉन्ग ड्राइव पर लेकर जायेगा। रात को पदमावती होटल में उसके जन्मदिन की पार्टी है। उसकी खरीदारी में तो कल रात को देर हो गई थी। सोमेश, शहर के बड़े सेठ का ऐश्वर्य,ऐशगाह मस्ती पसंद, गोरा चिट्ठ लड़का है। मेरा कितना खूयाल रखता है। इन्हीं विचारों में खोई हुई वह फटाफट तैयार हो निकल ही रही थी की फूल सिंह व शंकर सिंह सामने आ गये। शंकर सिंह ने पूछा - ' बेटे जल्दी में हो ? ' ' नहीं अंकल, वो एक दोस्त का जन्मदिन है। ' ' अच्छी बात है,हमारी तरफ़ से भी उसे ढ़ेर सारी शुभकामनायें देना। '... बेटा दोस्त का जन्मदिन तो याद है, क्या माँ की बरसी भी याद है। ' ' उफ़ मैं तो भूल ही गई। ' आँखें बन्द कर दाएं हाथ को पहले सिर से लगा सीने पर लगाया। सैंडिल उतारी। दीवार पर टंगी माँ के छाया चित्र के सामने हाथ जोड़े, दो मिनिट मौन रख, वापस सैंडिल पहन रवाना होने लगी। शंकर सिंह ' बेटा वैसे मुझें तुम्हें टोकना तो नहीं चाहिए पर क्या जवान बेटी को घर से बाहर जाते समय अपने बड़ों से इजाजत नहीं लेनी चाहिए।' ' अंकल यह जमाना बहुत ही तेज रफ्तार के साथ प्रगति कर रहा है, आज का युवा इन दकियानूसी विचारधारा से बहुत ऊपर उठ चूका है। आज जवान लड़कियां अपने भविष्य को लेकर बहुत ही उम्दा और सटीक विचार रखती हैं। अपना भला -बुरा सब पहचानती हैं। कब तक जमाना उसके पैरों में बेड़िया डाले रहेगा। ' एक श्वांस में वह बोलती गई। यह सब सुन पास खड़े फूल सिंह को ऐसा भान हो रहा था मानो एक साथ कई बिच्छूओं ने डंक मार दिये हों। जमीन दंस रही हो। आसमान फट रहा हो। वह बदहवास हुआ जा रहा था। अपने आपको संभालते हुए बोला ' मैंने तुम्हें कब बेड़ियों में जकड़ा।

बेटियाँ घर की आन-बान-शान होती हैं। वो घर का सोना होती हैं। जैसे कोई भी व्यक्ति लोहे को यहाँ-वहाँ, कहीं भी रख देता है उसे कोई नहीं चूरा कर ले जाता है, पर उसी लोहे की जगह यदि वह सोना रख दे तो कोई भी उसे चूरा ले जा सकता है। इसी वजह से मैं तुम्हारे बाहर आने-जाने का विरोध नहीं करता हूँ, पर एक पिता को यह तो जानकारी होनी ही चाहिए की उसका वह अनमोल हीरा कहाँ रखा हुआ है। ' ' मैं कोई सोना-वोना नहीं हूँ।' फूल सिंह ने अपने मन को कोसते हुए- ठीक है अभी जाओ, शाम को तुम्हारी माँ की पंद्रहवीं बरसी पर कीर्तन रखा है। गोधूलि से पहले घर आ जाना। 'फूल सिंह का यह कथन पुरा भी नहीं हुआ था कि बाहर से गाड़ी के हॉर्न की आवाज़ आई और राशि बाहर निकल गई। एक पिता को अपनी बेटी की जो चिंता होनी चाहिए वह फूल सिंह को थी। पिता अपने बच्चों के लिए नहीं का अर्थ कभी नहीं जानना चाहता। हर पिता के पास अपने बच्चों के लिए एक गुप्त शक्ति होती है, और उसी अनुभूति से वह अपने बच्चों का हर बड़ी से बड़ी मुसीबत में रक्षक बन सामने खड़ा रहता है। चाहे बच्चे उन्हें बतायें या नहीं बतायें।एक पिता के पास सबसे अनमोल उपहार उसका अदृश्य प्यार ही होता है। जिसका नाजायज फायदा उठाकर बच्चे मनमानी करते हुए, कभी कभी हद पार कर जाते हैं। मन में इन्हीं विचारों में लीन रहते हुए। मोबाइल पर घंटी बजी और पास बैठ कर अख़बार पढ़ रहे शंकर सिंह व फूल सिंह का मौन टूटा। ' भाईजी आज मेरा मन किसी आशंका से शंकित हो रहा है। जैसे ही मोबाइल की घंटी बजी मुझें कुछ अजीब सा महसूस हो रहा है। ' क़िस का फ़ोन है? ' किसी लॉन देने वाली कम्पनी का होगा। आज कल दिन में दस फ़ोन तो इन लॉन देने वाले प्राइवेट बैंकों के ही आजाते हैं, कभी प्रॉपर्टी सर्च कर रहे हो क्या?पता नहीं कैसे कैसे अंटसंट फ़ोन आते रहते हैं? ' ' इन लोगों के पास हमारे नम्बर भी पता नहीं कहाँ से आ जाते हैं?' शंकर सिंह अख़बार को रखते हुए बोला , कुछ रुककर एक बार मैंने ऐसे ही एक फ़ोन आने पर यूँ ही पूछ लिया। बेटा सरकारी नौकरी है या प्राइवेट तो बोली- अरे अंकल! आज के इस बेरोजगारी के दौर में कहाँ सरकारी नौकरी रखी है, सुबह सात बजे से शाम सात बजे तक मोबाइल पर अनजान लोगों से लॉन की गुहार लगाते रहते हैं तब जाकर महीने भर से पंद्रह हजार रूपये नसीब होते हैं। और कई लोगों की झिड़कियां, अनाप-सनाप कई अनर्गल बातें। तब मुझें महसूस हुआ की इन लोगों से हमें तमीज से ही बात करनी चाहिए।' यह कहते हुए शंकर सिंह खड़ा हुआ 'अच्छा मैं अब चलता हूँ, शाम को कीर्तन में आ जाऊँगा।' ' समय से ही आ जाना। ' बसंत माह में सूर्य भी मानो जैसे अपनी संध्या प्रेयसी से मिलने की जल्दी में हो, वैसी ही रफ्तार से दूर जंगल में हाइवे पर राशि और सोमेश की गाड़ी दौड़ रही थी। ' आज मेरी माँ की बरसी है, पापा ने कीर्तन रखा है। मुझें गोधूलि से पहले घर पहुंचना है । पापा आजकल वैसे ही मुझसे नाराज़ हैं।' राशि ने सोमेश के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा। ' क्या माँ की बरसी ? ' हाँ ' ' तुम भी इन अंधविश्वासों में पड़ी हो, जो मर गये उनके लिए क्या भजन और क्या कीर्तन? ' सोमेश ने राशि का हाथ कंधे से हटाते हुए प्रश्नवाचक दृष्टि से देखते हुए कहा। ' यह सब हमारी भारतीय सभ्यता और संस्कृति के संस्कार हैं। ' ' यह संस्कारों के चक्कर में तुम कब से पड़ने लगी रशृ ' तिरछी नजरों से देख सोमेश बोला। कुछ देर दोनों में कोई बातचीत नहीं हुई। तभी सोमेश गाड़ी के अचानक ब्रेक लगाता है। दोनों एक साथ झटके से आगे की ओर झुकते हैं। ' यह क्या हुआ सोम ? ' ' कुछ नहीं कोई जंगली जानवर सामने आ गया था।' पश्चिम में सूर्यास्त अपने आदर्श निष्कर्ष पर था। वह आज की दैनिक यात्रा से जीवन के नये सबक सिखाता विभिन्न रंगों में रंग रहा था। जैसे हर अंत के बाद नई पहल होती है का संदेश दे रहा हो । इधर उन दोनों के मन में भी कई-कई प्रश्न उठ रहे थे। दोनों को एक धुंधली सी परछाई में जंगली भालू सड़क पार करता हुआ दिखाई दिया ' आज कल मोहक से कुछ ज्यादा ही दोस्ती हो गई है तुम्हारी ? ' क्या? 'हाँ, आज दिन में भी उसके कितने मैसेज, आये हैं, तुम्हारे मोबाइल पर।' राशि को घूरते हुए सोमेश बोला। 'तुमने मेरे मोबाइल को भी चैक किया।' ' मोहक मेरा अच्छा दोस्त है, मेरा सहपाठी है, बचपन से मेरे साथ पढ़ रहा है और तुम उस पर शक कर रहे हो। ' ' मुझें तुम्हारा यह औरों से बात करना, मिलना-जुलना अच्छा नहीं लगता। ' ' मैं कोई चिड़िया नहीं हूँ, जो बन्द पिंजरे में रहूँ। ना ही किसी सर्कस की जानवर हूँ जो मालिक के इशारों पर नाचूं। मेरी निजी जिन्दगी है,निजी विचार हैं। इन्हीं विचारों के लिए तो मैंने अपने पापा तक से दूरी बना ली... ' अच्छा गेट खोलो, और बाहर निकलो गाड़ी से। ' ' क्या कहा ? ' हाँ, वही जो तुमने सुना। उधर प्रकृति में सूर्य रोशनी को त्याग रहा था,इधर सोमेश राशि को राशि ने बिना कुछ सोचे समझे गाड़ी का गेट खोला और बाहर निकल गई। सोमेश ने भी गाड़ी स्टार्ट की और एक साथ तेज गति से धुँवा छोड़ते हुए रवानगी ली। अँधेरा धीरे-धीरे आसमान से उतर रहा, हल्की-हल्की चाँदनी पसर रही थी, की राशि के मोबाइल पर घंटी बजी। कहाँ हो बेटा, घर नहीं आई अभी तक, सब तैयारियाँ हो गई है। आप मुझें लेने आ जाओ पापा। मोबाइल बन्द।

राजकुमार इंद्रेश

कहानी

मॉर्निंग टॉक

कॉलेज स्टेडियम की हरित परिधि पर गुलाबी ठंड की हल्की चादर फैली थी। सूर्योदय की सुनहरी रेखाएँ ओस में भीगी घास पर उतर रही थीं। चारों ओर स्वस्थ वातावरण–कहीं सीनियर लाफ्टर क्लब की ठहाकों से भरी ताल, कहीं योगासन में स्थिर देह और शांत श्वास, युवा ट्रैक पर दौड़ते हुए अपने लक्ष्य नापते, कुछ लोग लंबी चाल में वॉक करते। बीच मैदान में बच्चों की हॉकी और फुटबॉल प्रैक्टिस–सीटी, गेंद की थाप और उत्साह का शोर। इसी ट्रेक पर शहर की चार स्वास्थ्य की सजग महिलाएँ मॉर्निंग वॉक में साथ हो लीं। रोज़ की तरह आज भी उनकी बातें साफ़ सुनाई दे रही थीं, क्योंकि ठंड की सुबह में मैदान अभी आधा खाली था और खुला स्टेडियम शब्दों को बिना रोक-टोक दूर तक पहुँचा देता था। युग परंपरा अनुसार शिकायतों की पोटली खुल गई।पहली, शारदा–पचास के आसपास–आधुनिक बहू की शिकायत लेकर चली। बोली, 'घर में सब कुछ मशीन जैसा हो गया है। मोबाइल, डाइट, जिम–संस्कारों का समय ही नहीं।' उसके स्वर में असुरक्षा थी, जैसे समय उससे आगे निकल गया हो। दूसरी, रिया–अपने पीहर की भाभी पर

बरसी, 'हर बात में तुलना, हर सुख में हिसाब। अपनापन जैसे तिजोरी में बंद हो।' उसके शब्दों में पुराने रिश्तों की कसक थी। तीसरी, अनन्या अपनी -कुंवारी, कॉलेज पढ़ती ननद की चिंता-भरी आलोचना करने लगी, 'आज की पढ़ाई, आज़ादी–सब ठीक, पर दिशा कौन देगा?' यह डर था कि नई उड़ान कहीं राह न खो दे। चौथी, काव्या–सासू की बात लेकर आई, 'हर निर्णय पर परछाई। साँस लेने की जगह भी नियम।' उसके वाक्यों में दबे सपनों की आह थी। उनकी बातें सुनकर पुरुष मंडली में शुक्ला जी बोले ,अरे मेरे घर में भी बहू आटे में पानी भी गूगल को पूछ कर मिलाती है। साथी मुस्कराए लो यहाँ भी शिकायतों का मैदान कम नहीं है। चलते-चलते धूप तेज़ हुई। मैदान गरमाने लगा, जैसे शब्दों की तपिश हवा में घुल गई हो। तभी बच्चों की टीम के बीच एक छोटी बच्ची गिर पड़ी। चारों महिलाओं की चाल एक साथ रुकी। बिना कहे, शारदा ने पानी की बोतल बढ़ाई, रिया ने घुटना साफ किया, अनन्या ने कोच को बुलाया, काव्या ने बच्ची को सहारा दिया। बच्ची उठी, मुस्कराई–खेल फिर शुरू। कुछ पल चुप्पी रही। शारदा ने कहा, 'शायद हम भी गिरते हैं, बस सहारे की ज़रूरत होती है।' रिया बोली, 'कसूर अक्सर हमारी उम्मीदों का होता है।'

अनन्या ने जोड़ा, 'दिशा आदेश से नहीं, संवाद से मिलती है।' काव्या मुस्कराई, 'और साँस तब खुलती है जब हम जगह देते हैं। ' सूरज अब ऊँचा था। गुलाबी ठंड विदा हो रही थी। चारों ने महसूस किया–सुबह की हवा में नहीं, उनके भीतर भी गर्मी आ गई है; शिकायत की नहीं, समझ की। वे अलग रास्तों पर लौटीं, पर मन हल्के थे–क्योंकि आज मैदान ने उन्हें खेल के साथ जीवन का भी अभ्यास करा दिया था।

-- दिलीप आचार्य
'सोमेश्वर'

लघुकथा

गिरगिट

चलती हुई कार अचानक रुकी. चार महिलाएं उतरी. कुछ पल में ये महिलाएं अचानक उछलकूद करती नज़र आई. इनके चेहरे पर भय के निशान और मुँह से चीख निकल रही थी. लगता है कि कोई बड़ा संकट आ गया.

आस-पास खड़े कुछ लोग मदद के लिए दौड़ कर पास आये. क्या हुआ? क्या हुआ? ... की बातें हवा में गूँजी. एक महिला भय से पीले चेहरे के साथ बोली, वो... वो...वो देखो! एक व्यक्ति इन्हें समझाते हुए बोला, ओह! ये... ये तो गिरगिट का बच्चा है. इससे डरने की कोई बात नहीं. बेचारा ये खुद डरा हुआ. ये तो बचाव के लिये भाग रहा है.

दो व्यक्तियों ने गिरगिट को दूर भगाया तब महिलाओं को चैन मिला और कॉलोनी के लिये आगे बढ़ी. एक बुजुर्ग व्यक्ति बोला, उफ्फ? मात्र हथेली में समाने वाले छोटे से गिरगिट से डरते हैं लोग! खुद? दूसरों को कितना डराता हैं, वाणी से जहर उगलता हैं, अपना रंग प्रति पल बदलता हैं, तड़फाता हैं, घात करता हैं, भ्रष्टाचार करता हैं, रौब जमाता हैं, मारकाट करता हैं ... इंसान से बढ़कर तो कोई खतरनाक जीव इस दुनिया में नहीं... न खुद सुकून से जीता है और न दूसरों को जीने देता है. इंसान सुधर जाएं तो ये धरती ही स्वर्ग से बढ़कर बन जायेगी.

मोहनलाल जाँगिड़, बीकानेर